www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया

❄

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
फेक्स : (०५६५) २५३०२००
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

युगसंधि—महान परिवर्तन की वेला

धरती में दबे और ऊपर बिखरे बीज वर्षा आरंभ होते ही अंकुर फोड़ने लगते हैं। अंकुर पौधे बनते और पौधे बढ़कर परिपक्व वृक्ष का रूप धारण कर लेते हैं। वृक्ष भी चैन से नहीं बैठते; वसंत आते ही वे फूलों से लद जाते हैं। फूल भी स्थिर कहाँ रहते हैं; वे फल बनते हैं, अनेकों की क्षुधा बुझाते और उनमें से नए बीजों की उत्पत्ति होती है। उन्हें बाद में अंकुरित होने का अवसर मिले, तो एक ही पेड़ की परिणति कुछ ही समय में इतनी अधिक विस्तृत हो जाती है, जिनसे एक उद्यान बनकर खड़ा हो जाए।

मत्स्यावतार की कथा भी ऐसी ही आश्चर्यमयी है। ब्रह्मा जी के कमंडल में दृश्यमान होने वाला छोटा कीड़ा मत्स्यावतार के रूप में विकसित हुआ और समूचे भूमंडल को अपने विस्तार में लपेट लिया। इन्हीं कथाओं का एक नया प्रत्यावर्तन इन्हीं दिनों होने जा रहा है। संभव है २१वीं सदी का विशालकाय आंदोलन एक छोटे-से शांतिकुंज आश्रम से प्रकटे और ऐसा चमत्कार उत्पन्न करे कि उसके आँचल में भारत ही नहीं, समूचे विश्व को आश्रय मिले। दुनियाँ नया रूप धारण करे और विकृत विचार, परिष्कृत होकर, दूरदर्शी विवेकशीलता के रूप में अपना सुविस्तृत परिचय देने लगे।

यह बहुमत का युग है—संघ शक्ति का। मिल-जुलकर पक्षी एक साथ जोर लगाते हैं, तो मजबूत जाल को एक ही झटके में उखाड़ लेने और उड़ा ले जाने में सफल हो जाते हैं। ईंटें मिलकर भव्य-भवन खड़ा कर देती हैं। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। तिनके मिलकर हाथी बाँधने वाला रस्सा बनाते हैं। धूलिकण अंधड़ बनकर आकाश पर छाते देखे गए हैं। रीछ-वानरों और ग्वाल-बालों के संयुक्त पुरुषार्थ की कथा-गाथा युग-युगों से कही-सुनी जाती रही है। इन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इन दिनों वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में छाई हुई अतिवादी अवांछनीयता और कुछ नहीं, अधिकांश लोगों द्वारा अचिंत्य-चिंतन और अकरणीय क्रिया-कृत्य अपना लिए जाने का ही प्रतिफल है। यदि यह बहुमत उलट जाए, तो फिर परिस्थितियों के बदल जाने में देर न लगे। पुरातन सतयुग की वापसी के दृश्य पुनः मूर्तिमान होकर, सामने आ खड़े हों। यही होने भी जा रहा है। प्राचीन काल में ऋषि कल्प व्यक्तियों का बाहुल्य था। हर किसी की ललक समाज से, कम से कम लेने और अधिक से अधिक देने की रहा करती थी। वह बचत ही परमार्थ प्रयोजनों में लगकर, ऐसा माहौल बना दिया करती थी, जिसका स्मरण अभी भी लोग सतयुगी परंपरा के रूप में किया करते हैं; वह समय फिर वापस लौट आने की कामना किया करते हैं। दैत्य का कोई आकार विशेष नहीं होता। वे भी मनुष्यों की ही शक्ल-सूरत के होते हैं। अंतर केवल इतना ही होता है कि दैत्य दूसरों से, संसार से लूटते-खसोटते अधिक हैं और अपने समय, श्रम, चिंतन तथा वैभव का न्यूनतम भाग सत्कर्मों में लगाते हैं। यही है वह अंतर, जिसके कारण देवता पूजे जाते और दैत्य सर्वत्र भर्त्सना के भाजन बनते हैं।

प्रस्तुत परिवर्तन इसी रूप में अवतरित होने वाला है कि दैत्य वर्ग अपनी हठवादिता से पीछे हटेंगे और देवत्व की सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए उन्मुख होंगे। यह हलचल असंख्यों के अंतराल में अनायास ही उठेगी। उस चमत्कार को हम सब इन्हीं आँखों से देखेंगे। दृष्टिकोण में सुधार-परिवर्तन होते ही परिस्थितियाँ बदलेंगी। वातावरण बदलेगा और प्रचलन में ऐसा हेर-फेर होगा, जिसे युग-परिवर्तन के नाम से समझा, देखा और परखा जा सके।

इस प्रयोजन के लिए एक सुनियोजित योजना दैवी चेतना के संकेतों पर इन्हीं दिनों अवतरित हुई है। इस साधना और प्रयास-प्रक्रिया का नाम 'युग संधि महापुरश्चरण' दिया गया है। उसका विस्तार भी आश्चर्यजनक गति से हो रहा है। अमरकंटक से नर्मदा [illegible] की तरह शांतिकुंज हरिद्वार से युग-संधि-संकल्प

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

अनेकों आयोजन आए दिन होते रहते हैं, पर इस साधना का संकल्प एवं लक्ष्य एक ही है—युग परिवर्तन के उपयुक्त वातावरण एवं परिवर्तन प्रस्तुत करना। जिनकी इस महान प्रयोजन में तनिक भी रुचि है, वे इस आत्मीय आमंत्रण का परिचय प्राप्त करते ही दौड़े चले आ रहे हैं और इस महाक्रांति के प्रवाह में उत्सुकतापूर्वक सम्मिलित हो रहे हैं।

पुरश्चरण की तप-साधना का प्रारंभिक रूप एक लाख दीपयज्ञों की साक्षी में, एक करोड़ प्रतिभाओं को यजमान रूप में सम्मिलित करने का था। अब लोगों की श्रद्धा, सद्भावना और आतुरता को देखते हुए उसे ठीक दूना कर दिया गया है; ताकि कम समय में अधिकाधिक प्रतिफल की उपलब्धि हो सके। इसी उद्देश्य से संकल्प जोशीला हो गया है। प्रारंभिक निश्चय था कि महापुरश्चरण की पूर्णाहुति सन २००० में बीसवीं सदी का अंत होते-होते होगी। अब लक्ष्य दूना हो जाने से संकल्प को दो हिस्सों में बाँट दिया गया है। अब ५-५ वर्ष में एक-एक करोड़ करके सन् २००० तक पूरी पूर्णाहुति में दो करोड़ भागीदार बनाने का लक्ष्य है। दीप यज्ञायोजन भी एक लाख के स्थान पर दो लाख हो जाएँगे।

आरंभ में सोचा गया था कि यह आयोजन हरिद्वार या प्रयाग के कुंभ पर्व के स्थान पर संपन्न किया जाए और एक ही स्थान पर सभी भागीदार एकत्रित हों और उस समारोह को अभूतपूर्व समारोह के रूप में प्रस्तुत करें, पर अब अधिक क्षेत्रों की जनता को अपने-अपने समीपवर्ती केंद्रों में एकत्र होने की सुविधा रहेगी और दो स्थानों की अपेक्षा लाखों स्थानों पर एकत्रित होने का अवसर मिलेगा। सम्मिलित होने वालों को दूर जाने-आने का किराया-भाड़ा भी खर्च न करना पड़ेगा और समीपवर्ती स्थान में ठहरने की, भोजन आदि की व्यवस्था भी बन पड़ेगी। इस महा प्रयास की जानकारी अधिक व्यापक क्षेत्र में सुविधापूर्वक पहुँच सकेगी, जो इस पुरश्चरण का मूलभूत उद्देश्य हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संचालकों ने अपने कंधों पर धारण किया है। मौलिक श्रेय तो उसी महाशक्ति का है, जिसने मनुष्य जैसे प्राणी की सीमित शक्ति से किसी भी प्रकार न बन पड़ने वाले कार्यों को करने की प्रेरणा दी है और काम में जुट जाने के लिए आगे धकेलकर बाधित किया है। वही इस प्रयोजन को पूर्ण भी करेगी, क्योंकि युग परिवर्तन का नियोजन भी उसी का है।

शांतिकुंज के संचालक प्रायः अस्सी वर्ष के होने जा रहे हैं। उनका शरीर भी मनुष्य जीवन की मर्यादा के अनुरूप अपने अंतिम चरण में है। फिर नियंता ने उनके जिम्मे एक और भी बड़ा तथा महत्त्वपूर्ण कार्य पहले से ही सुपुर्द कर दिया है, जो कि स्थूल शरीर से नहीं, सूक्ष्म शरीर से ही बन पड़ेगा। वर्तमान शरीर को छोड़ना और नए सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करके प्रचंड शक्ति का परिचय देना एक ऐसा कार्य है, जो सशक्त आत्मा के द्वारा ही बन पड़ सकता है। इतने पर भी किसी को यह आशंका नहीं करनी चाहिए कि निर्धारित "युग संधि महा पुरश्चरण" में कोई बाधा पड़ेगी। महाकाल ने ही यह संकल्प लिया है और वही इसे समग्र रूप में पूरा कराएगा; फिर उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु अगले दस वर्षों तक शांतिकुंज के वर्तमान संचालक भी आवश्यक व्यवस्था बनाने और तारतम्य बिठाते रहने के लिए भी तो वचनबद्ध हैं।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रयोजन के अनुरूप दायित्व भी भारी

अखंड ज्योति हिंदी मासिक तथा अन्य भाषाओं में उसके संस्करणों के स्थाई सदस्यों की संख्या प्रायः पाँच लाख है। अखंड ज्योति के पाठकों के साथ विगत पचास वर्षों से संपर्क, विचार-विनिमय और परामर्श का क्रम चलता रहा है। इनमें से अधिकांश ऐसे हैं, जो कई-कई बार यात्राएँ करके, यहाँ आते और घनिष्ठता संपादन करते रहे हैं। इस आधार पर इन्हें परिवार के सदस्य और परिजन माना जाता रहा है। शिक्षक भी अभिभावकों की गणना में आते हैं। गोत्र, वंश परंपरा से भी मिलते हैं और अध्यापक परंपरा से भी। इतना बड़ा परिवार अनायास ही कैसे जुट गया ? संभवतः पूर्व जन्मों के संचित किन्हीं संस्कारों ने यह मिलन-संयोग स्तर का सुयोग बना दिया हो।

महत्त्वपूर्ण प्रसंगों पर स्वजन संबंधी ही याद किए जाते हैं। उन्हें ही हँसी-खुशी के, दुःख-दर्द के प्रसंगों में याद किया जाता है। सहभागी भी प्रायः वे ही रहते हैं। बाहर के लोग तो कौतुक-कौतूहल भर देखने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। इसलिए उनसे कोई बड़ी आशा-अपेक्षा भी नहीं की जाती। महाभारत में कृष्ण का प्रयोजन पूरा करने के लिए पाँच पांडव ही आगे रहे। पंचप्यारे भी सिख धर्म में प्रसिद्ध हैं। महाकाल के सौंपे हुए नव-सृजन प्रयोजन का दायित्व भी भारी है और उनमें भाग लेने वालों को श्रेय भी असाधारण मिलने वाला है। इसलिए हर किसी से बड़ी आशा भी नहीं की जा सकती। पाँच में से एक उभर आए, तो बहुत है। पाँच लाख की स्थिति देखते हुए यदि एक लाख कदम-से-कदम मिलाकर चल सकें, तो बहुत है। इतनों के सहारे सौंपा हुआ दायित्व भी निभ जाएगा।

मनुष्य शरीर पाँच तत्त्वों का बना है। अन्य शरीरधारियों की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शारीरिक दृष्टि से उसमें भी सीमित सामर्थ्य ही पायी जाती है। उच्चस्तरीय मनोबल तो केवल मनुष्य को ही प्राप्त हैं, जिसके बल पर गाँधी जैसे ५ फीट २ इंच और ९६ पौंड वजन के व्यक्ति भी संसार को हिला देने वाले काम कर सकते है। बुद्ध, परशुराम जैसों में ऐसे ही लोगों की गणना होती है।

मनोबल कुछ तो शरीर में भी होता है, जिसके आधार पर वह थोड़ी हिम्मत दिखाता और किसी सीमा तक साहस का परिचय देता है ? असाधारण मनोबल जो प्रवाह को उलट सके और वातावरण को उलटकर किसी नए ढाँचे में बदल सके, इतना अनुदान दैवी चेतना के विशेष अनुग्रह से ही प्राप्त होता है। उस प्रकार की उपलब्धि न होने पर मात्र कायिक पुरुषार्थ कुछ थोड़ा-बहुत ही कर या चल पाता है। कंकड़-पत्थर जहाँ-तहाँ पड़े रहते हैं; पर सोंना-चाँदी जैसी बहुमूल्य वस्तुओं को कीमती तिजोरियों में संचित कर रखा जाता है। शरीरगत स्वल्प परिश्रम या पुरुषार्थ तो किंसी सीमा तक हर किसी को प्राप्त होता है; पर उसके सहारे बन प्रायः इतना ही पड़ता है कि शारीरिक आवश्यकताएँ या क्रियाएँ पूरी हो सकें। कान, संगीत से लेकर चापलूसी भरी प्रशंसा सुनने भर के लिए लालायित रहता है। आँखों को सुंदर-सुहावने दृश्यों में रुचि होती है। जीभ को नए-नए स्वाद चाहिए। जननेंद्रिय का प्रवाह भी प्रायः अधोगामी होता है। मन को ग्यारहवीं इंद्रिय माना गया है; उसे संग्रह की तृष्णा और बड़प्पन की प्रशंसा चाहिए। इतनी ही परिधि के पुरुषार्थ प्रायः शरीर कर पाता है; पर जिसमें आत्मबल की आवश्यकता पड़ती है, वह दैवी वरदान की तरह प्राप्त होता है। उसके लिए छिटपुट कर्मकांड या चिह्न-पूजा जैसे उपहार-मनुहार प्रस्तुत करने से भी काम नहीं चलता, उसके लिए आवश्यक पात्रता चाहिए।

किसी बरतन में कितना पानी भरा जा सकता है, यह उसकी गहराई और चौड़ाई से विदित होता है। शरीर का बाहरी कलेवर तो इंद्रियजन्य आवश्यकता तक के काम आकर समाप्त हो जाता है। जिसे ले भी प्रतिभा कहा जाता है तब तो मनोबल या आत्मबल से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने पड़ते हैं, जो शारीरिक सुविधा तक सीमित न हों, वरन् पुण्य-परमार्थ जैसे अभ्यासों में अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकें। यही अंतराल की वह गहराई है, जिसे मापकर दैवी अनुग्रह बरसते हैं और ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी स्तर की उच्च उपलब्धियाँ हस्तगत की जाती हैं।

रहने का छोटा-सा घर बनाने के लिए कितना समय, श्रम और पैसा लगता है, इसे सभी जानते हैं, फिर विश्व का नव निर्माण करने के लिए कितना मनोबल, कितना श्रम, कितने साधन चाहिए, उसका अनुमान लगाना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए। इतना वर्चस्व किसी मनुष्य-तन धारी में नहीं हो सकता। इसके लिए ईश्वरीय आत्मबल, सुसंस्कारिता द्वारा संचित मनोबल की बहुत बड़ी मात्रा चाहिए। यह प्राप्त कर सकना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए। आवश्यकता एक ही बात की है और वह है—आदर्शों का परिपालन निष्ठापूर्वक किया जाए। आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता के प्रति गहरी आस्था हो, अपना मूल्य और महत्त्व समझा जाए और जो क्षमता जन्मजात रूप से उपलब्ध है, उसका समुचित उपयोग किया जाए।

मनुष्य के पूर्वसंचित संस्कारों का संग्रह तथा उनके फलित होने का अवसर मोटेतौर से हस्तरेखाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करके जाना जा सकता है। अँगूठे की छाप व्यक्ति की हस्तरेखाओं की तरह ही भिन्न होती है। जिसकी इन्हें समुचित जानकारी है, वे मनुष्य की भावी संभावनाओं, उनकी रोकथाम तथा बढ़ोत्तरी करने के संबंध में भी बहुत कुछ जान सकते हैं। अनिष्टों को रोकने तथा अशुभ संभावनाओं की रोकथाम करने के संबंध में क्या उपाय किया जाएँ ? इस संदर्भ में भी अनुमान लगाने तथा उपाय खोजने में समर्थ हो सकते हैं।

फ़ोटोग्राफी से मात्र आकृति संबंधी जानकारी नहीं मिलती, वरन् उसके गुण, कर्म, स्वभाव के संबंध में भी बहुत कुछ जाना-समझा जा सकता है। यह जानकारियाँ मात्र वस्तस्थिति को ही नहीं बताती, वरन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

साधारणतया तो यह अंकन भिन्नतासूचक चित्र-विचित्र जानकारियाँ ही दे पाते हैं; पर जिन्हें इनके सूक्ष्म दर्शन का ज्ञान है, वे यह पता भी लगा लेते हैं कि अगले दिनों क्या कुछ शुभ-अशुभ घटनाक्रम घटित होने जा रहा है। इस आधार पर कठिनाइयों का निवारण-निराकरण ही नहीं, सुखद संभावनाओं को अधिक अच्छी तरह फलित होने के संबंध में भी मार्गदर्शन किए जा सकते हैं। कोई भी घटनाक्रम अनिवार्य या अकाट्य नहीं है। उन सभी के उपाय-उपचार हैं।

कई रोग असाध्य या कष्टसाध्य समझे जाते हैं; पर ऐसा नहीं है कि उनका उपाय-उपचार हो. ही नहीं सकता हो ? मनुष्य को अपने भाग्य का विधाता इसी दृष्टि से कहा गया है कि वह जहाँ भवितव्यता से प्रेरित रहता है, वहाँ उसमें उस क्षमता के बीज भी मौजूद हैं कि निवारण-निराकरण के उपाय खोज सके, भवितव्यता को टाल सके और प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल सकें। इसी दृष्टि से इन सूक्ष्म-विधाओं की उपयोगिता भी है। यदि बदलाव संभव न हो, तो मनुष्य भाग्य-चक्र की कठपुतली मात्र बनकर ही रह जाएगा।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

कुछ अतिरिक्त पूछ-ताछ

इक्कीसवीं सदी की अवधि अनेकानेक चुनौतियों से भरी है। नदी का बहाव और हवा का रुख बदल देना सहज नहीं होता। उसे कठिनाई से भी मनुष्य ही पार पाता है; पर इतना निश्चित् है कि उनकी प्रतिभा असाधारण होनी चाहिए। साधारण योग्यता के रहते तो वैसा कर-गुजरना दुस्साहस ही माना जाएगा और जोखिम भरा भी।

अखंड ज्योति परिजनों की इतनी बड़ी भीड़ आकस्मिक रूप से ही इकट्ठी नहीं हो गई है। अमुक रुचि का पठन-पाठन करने का कौतूहल ही इन्हें समवेत होने या एक सूत्र में बाँधने का कारण नहीं है, वरन् इसके पीछे कुछ रहस्यमय कारण भी काम कर रहे हैं। गोताखोर गहरे पानी में डुबकी लगाकर मोती संग्रह करता है। मणि-मुक्तक पाए तो खदानों में ही जाते हैं, पर उन्हें कोई कहीं से भी झट से खुदाई कर एकत्रित नहीं कर सकता। दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ बड़ी खोज के बाद, किन्हीं विशेष क्षेत्रों में ही पाई जाती हैं।

निकट भविष्य में कितनों को ही कितनी ही बड़ी भूमिका निभा सकने की क्षमता से संपन्न बनाया जाना है। हर काम हर आदमी नहीं करता है। भारी वजन हाथी जैसे समर्थ प्राणी ही उठा सकने में सफल होते हैं। छोटे कद के प्राणी उसे उठा सकना तो दूर, दबाव की अधिकता से अपना ही कचूमर निकाल बैठेंगे। हर मनुष्य हर क्षमता से संपन्न नहीं है। रामायण में हनुमान की और महाभारत में अर्जुन की जो भूमिका रही, उसे उन दिनों उपस्थित जनों में से अन्य आसानी से पूरा नहीं कर सकते थे। मनुष्य की समर्थता में संदेह नहीं; पर बिना संचित सुसंस्कारिता, प्रतिभा और तप-संपदा के हर कोई चाहे जो कर गुजरे, ऐसा भी नहीं है। यही कारण है कि हर प्रयोजन के लिए पात्रता तलाशी जाती है और जो काम. जिसके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किसी की नियुक्ति नहीं की जा सकती; उसकी बलिष्ठता, हिम्मत, कौशल एवं प्रतिभा आदि गुणों को भी परखा जाता है।

अगले दिनों अनेकानेक ऐसे क्षेत्र सामने खड़े होंगे, जिनमें विशेष पुरुषार्थ दिखाने की आवश्यकता पड़ेगी; उन्हें साधारण लोग न कर सकेंगे। इस साधारण और असाधारण के चयन में अभी से ध्यान रखना होगा। एकाकी बड़े निर्णय नहीं किए जा सकते हैं। प्रतिभाओं की परख प्रतिस्पर्धाओं की कसौटी पर होती रहती है और जो अनेक बार अपनी वरिष्ठता का परिचय दे चुके होते हैं, उन्हें ही दुरूह मोर्चा सँभालने के लिए नियुक्त किया जाता है। शेष हल्के दर्जे के मोर्चे पर हल्के लोगों को लगाकर किसी प्रकार काम चलाया जाता है। अगले दिन, ऐसी ही अनेकों कसौटियाँ और चुनौतियाँ साथ लेकर आ रहे हैं।

इस संदर्भ में अखंड ज्योति परिजनों की जाँच-पड़ताल अभी से आरंभ की जा रही है। यों उस परिकर को सामान्य लोगों की तुलना में असामान्य समझते हुए ही एकत्रित किया गया है। इन दिनों उथले साहित्य में, उथले स्तर के, उथली अभिरुचि के लोगों का आकर्षण है। उन्हें उत्कृष्टता का महत्त्व समझने में उत्साह ही नहीं उभरता, कहने-समझाने पर भी तथ्य गले नहीं उतरता। यही कारण है कि उच्चस्तरीय विवेकशीलता का प्रतिपादन करने वाला साहित्य प्रायः नहीं के बराबर ही बिकता-खरीदा जाता है। लोग उसे आग्रहपूर्वक देने पर भी मुफ्त पढ़ने तक को तैयार नहीं होते। जिसमें रुचि न हो, उसके लिए समय कौन लगाए ? माथा-पच्ची कौन करे ? यही कारण है कि अखंड ज्योति वाले विषय की अन्य पत्रिकाएँ कुछ दिन निकलने के बाद ही बंद हो जाती हैं। जो निकलती हैं, उसकी सदस्य संख्या कुछ सौ तक ही सीमित रहती है, सो भी विज्ञापन छापने की नीति अपनाने के बाद ही किसी प्रकार उसकी नाव पार लगती है, पर अखंड ज्योति के बारे में बात ही दूसरी है। गरिष्ठ विषय का प्रतिपादन रहने पर भी उसके पाठक इतनी बड़ी संख्या में [illegible] पत्रिकाओं में से किसी के साथ भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह चमत्कार अनायास ही नहीं हुआ है। किसी आकर्षण-शक्ति ने अपने चुंबकत्व के सहारे उन्हें ढूँढ़ा, खोजा और प्रयत्नपूर्वक एकत्रित किया है। इसका कारण सामयिक घटनाक्रमों में ही नहीं खोजा जाना चाहिए। संचित सुसंस्कारिता और विलक्षणता उन्हें अपने आकर्षण केंद्र के साथ जोड़ती रही है। सशक्त चुंबक के इर्द-गिर्द लौह-कण आकर्षित हो, खिंचे चले आते हैं और उस स्थान पर एकत्रित-एक जुट हो जाते हैं। ऐसा ही कुछ अखंड ज्योति पाठकों के संबंध में भी हुआ है।

इस प्रसंग को लेखन, प्रकाशन, वाचन के साहित्यिक क्षेत्र भर तक सीमित नहीं करना चाहिए। यह किसी बड़े मोर्चे पर जूझने वाले बलिष्ठ योद्धाओं का परिकर है, जो अनेक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते-होते इस शक्तिशाली अक्षौहिणी में एकत्रित हुआ है।

इसे साहित्य की गहराई में उतरकर समझना हो, तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि कुछ विशेष क्षमता संपन्न मधुमक्खियाँ ही इस छत्ते में रानी मक्खी के अनुशासन में रहने के लिए खिंचती चली आई हैं और इस प्रकार सघनतापूर्वक गुँथ गई हैं, मानों कई जन्म-जन्मांतरों से एक सूत्र में बँधी आ रही हों, जैसे—स्नेह-सूत्र में बँधे हुए आत्मीय जन होते हैं। इसका निरंतर परीक्षण भी होता रहा है। परिजनों को उनकी शक्ति-सामर्थ्य देखते हुए समय-समय पर ऐसे आदर्शवादी काम सौंपे जाते रहे हैं, जिसमें औसत आदमी की रुचि प्रायः नहीं ही होती। उन्हें भी इतनी तत्परता और तन्मयता के साथ करते रहना इस तथ्य का परिचायक है कि यह रास्ता चलती भीड़ नहीं है, वरन् यह किसी विशेष उद्देश्य के लिए विशिष्ट परिजनों का समुच्चय है।

स्पष्ट है कि इक्कीसवीं सदी के उत्कृष्ट आदर्शवादी मोर्चे पर जुझारू स्तर पर लड़ने वाले प्रचंड योद्धाओं का यह परिवार है। उसकी ट्रेनिंग लंबे समय से होती रही है। पत्रिका प्रायः ५२ साल से निकलती रही है, इनके पाठकों में अधिकांश ऐसे हैं, जो आरंभ से लेकर अब तक मिशन के साथ घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुए हैं और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आदर्शवादिता की विचारधारा जन्म-घूँटी की तरह पीते रहने के कारण उनकी नस-नस में रम गयी है।

यों अखंड ज्योति का स्थाई सदस्य होना भी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि इक्कीसवीं सदी के साथ जुड़े हुए उज्ज्वल भविष्य के साथ उनका अपना विषय भी कहीं न कहीं घनिष्ठतापूर्वक जुड़ा हुआ है। उन्हें कुछ ऐसा करना और बनना है, जिन्हें जनसामान्य को अनुकरणीय और अभिनंदनीय कहना पड़े।

अस्तु, परिजनों के पतों के साथ तीन और दिव्य आधार संकलित किए जा रहे हैं—(१) जन्म तिथि, स्थान तथा समय, (२) वर्तमान समय का फोटो, (३) हस्तरेखाओं का अंकन। यह तीन आधार किसी को भविष्य-फल बताने के लिए संग्रह नहीं किए जा रहे हैं। इनका उद्देश्य मात्र इतना ही है कि इस आधार पर परिजनों की विशिष्टता आँकी जा सके और उन्हें जब जो करना है, उसके लिए संकेत एवं मार्गदर्शन किया जा सके। इसके साथ ही विशेष प्रयोजनों में अपना निजी विशेष योगदान देना भी है, जिससे कठिनाइयों को सरल और सुसंभावनाओं को अधिक उत्साहपूर्वक अग्रगामी बनाया जा सकना संभव हो सके।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दैवी सहायता भी अपेक्षित

मनुष्य के अपने पुरुषार्थ, ज्ञान, सूझ-बूझ आदि का महत्त्व है। प्रायः उसी के आधार पर लोग ऊँचे उठते या कमी रहने पर नीचे गिरते हैं; पर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किन्हीं दूसरे समर्थों की सहायता से भी रुकी हुई गाड़ी चलने लगती है और कठिनाइयों का दबाव हल्का हो जाता है। जिनका व्यापार-व्यवसाय, पूँजी की कमी के कारण रुक गया है, उन्हें यदि बैंक आदि की तात्कालिक सहायता मिल जाए, तो रुका काम चलने लगता है और लिया हुआ ऋण ब्याज समेत चुक जाता है।

मित्र, सहायक, संबंधी भी कभी-कभी ऐसी सहायता कर देते हैं, जिसकी पहले से कोई संभावना या आशा न थी। दैवी अनुग्रह का तो कहना ही क्या ? कभी व्यापार-धंधे के सहारे अकस्मात किसी बड़े लाभ का सुयोग मिल जाने में, लाटरी खुल जाने आदि के रूप में भी ऐसे लाभ हस्तगत हो जाते हैं, जिनकी पहले से ऐसी कोई आशा न थी। जब वरदान फलता है, तो उसका लाभ विद्या, पौरुष आदि से भी बढ़कर मिल जाता है। उत्तराधिकार में एवं दान-दक्षिणा के रूप में मिली हुई उपलब्धियों को भी दैवी सहायता के रूप में ही गिना जाता है।

पुरुषार्थ हो या दैवी अनुग्रह, उनका मिलना-सुरक्षित रहना और किसी दुरुपयोग से नष्ट हो जाना जैसी परिस्थितियाँ भी कई बार मनुष्यों के सामने आती रहती हैं। यही बात कठिनाइयों, आपत्तियों से बचाव होने के संबंध में भी है। कई बार तो प्रयास, परिश्रम भी इसमें अपनी भूमिका निभाते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि बिना प्रयास के या स्वल्प प्रयत्न से भी बड़े लाभ हस्तगत हो जाते हैं। समय [illegible] से जो भारी चालें उलटी पड़ जाती हैं और भरपूर मेहनत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गयी आशा से विपरीत फल सामने आ खड़ा होता है। किसान का व्यवसाय एक बीज के बदले सौ दाने उत्पन्न करने जैसा लाभदायक है; पर उसमें भी कई बार अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओला, पाला, कड़ी ठंड आदि ऐसे संकट बीच में ही आ जाते हैं कि जो संभावना गणित के आधार पर आँकी गयी थी, वह सीधी से उलटी पड़ जाती है। कई बार इससे ठीक उलटा भी होता है। दाँव सीधा पड़ जाने पर ऐसी सफलता भी मिल जाती है, जिसके संबंध में न तो कोई आशा थी, न संभावना। यद्यपि ऐसा अपवादस्वरूप जब-तब ही होता है; पर यदि कभी ऐसा बन पड़े, तो उसे असंभव नहीं कहा जा सकता है।

अपवाद भले ही कम होते हों; पर अवश्य होते हैं। ऐसे अपवादों को दैवी कृपा या अनुग्रह के नाम से जाना जाता है। अप्रत्याशित परिणामों को भाग्य या समय का फेर भी कहते हैं। किसी बालक का धनवान वर्ग में जन्म लेना और अनायास ही विपुल धन का स्वामी बन जाना, किसी सिद्धांत विशेष पर आधारित नहीं है; इसे भाग्योदय ही कह सकते हैं। संसार में ऐसे भी अनेक मनुष्य हुए हैं, जिनके आरंभ में शिक्षा की, संपदा की, परिस्थितियों की सर्वथा प्रतिकूलता थी; पर एक के बाद एक ऐसे सुयोग मिलते और बनते गए कि वह अपने असाधारण कार्यों और प्रयासों में एक के बाद एक बड़ी सफलताएँ पाते गए और अंततः मूर्धन्य सौभाग्यवानों में गिने गए।

दुर्घटनाओं, विपत्तियों, हानियों, प्रतिकूलताओं के भी कभी-कभी ऐसे कुयोग आ धमकते हैं, जिनमें कोई दोष प्रत्यक्षतः दीखता नहीं, फिर भी न जाने कहाँ से और क्यों ऐसे संकट आ खड़े होते हैं कि सब कुछ चौपट हो जाता है। बनने जा रहे काम बिगड़ जाते हैं। ऐसे घटनाक्रमों को दुर्भाग्य, दैवी प्रकोप, भाग्य, पूर्वसंस्कार, भवितव्यता आदि कहकर मन को समझाया जाता है। वस्तुतः इस संसार में अनायास नाम की कोई चीज नहीं है। सृष्टि के नियमों की अकाट्यता प्रसिद्ध है। फिर भी अपवाद जैसे आकस्मिक बहुत कुछ होते रहते हैं। इसके पीछे भी कुछ कारण होते हैं भले हम जानते न

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनायास ही हो गयीं—ऐसा नहीं कहा जाता। किसका असली पिता कौन है ? इसकी सही जानकारी अपने आंप तक को नहीं होती; पर इस संबंध में माता के कथन को ही प्रामाणिक मान लिया जाता है। दूसरा कोई चारा भी तो नहीं।

आकस्मिक लाभ और आकस्मिक हानि के पीछे अक्सर भाग्य का फेर कहा जाता है; पर इसके पीछे भी कुछ नियम निर्धारण काम करते हैं। पूर्व जन्मों के संग्रहित संस्कार समयानुसार फलित होते हैं। इसका समुचित विधान जान न पाने के कारण उसे भाग्य कह देते हैं। एक दूसरा विधान संसार में ऐसा भी है, जिसे उदार अनुदान कहते हैं। आकस्मिक सहायताएँ भी इसी श्रेणी में आती हैं। जिनके पास फालतू पैसा होता है, वे उसे बैंक में जमा कर देते हैं। नियत अवधि के उपरांत वह ब्याज समेत वापस मिल जाता है, यद्यपि जमा करने और निकालने के समय में लंबी अवधि का अंतर होता है; पर वह है किसी नियम-व्यवस्था पर ही आधारित।

संसार में ऐसी आत्माएँ भी हैं, जिनके पास पुण्यफल का प्रचुर भंडार भरा पड़ा है। धन को घर में रखना जोखिम भरा समझा जाता है, इसलिए सुरक्षा और निश्चिंतता की दृष्टि से उसे बैंक में जमा कर दिया जाता है। पुण्य-परमार्थ भी ऐसी ही विधा है, जिसे उदारचेत्ता समय पर जरूरतमंदों को देते रहते हैं। इसमें दुहरा लाभ है—एक तो जिसका काम रुक गया था, उसका काम चल जाता है, दूसरा जिसने जमा किया था, उसे आवश्यकतानुसार वापस मिल जाता है। पुण्य-परमार्थ का, दान-अनुदान का यही क्रम भी उसी आधार पर चलता है, जिसके आधार पर बैंकों का, बीमा का, शेयरों का कारोबार चलता रहता है। अनुदान आदि के चक्र भी इसी आधार पर चलते हैं।

इक्कीसवीं सदी में दुहरे कारोबार बड़े रूप में चलेंगे। एक यह कि जो अवांछनीयताएँ इन दिनों बुरी तरह छाई हैं, उन्हें उलट देना, ताकि छाए हुए संकटों को निरस्त किया जा सके। दूसरा यह कि नव निर्माण की दृष्टि से बहुत कुछ किया जाना है। क्षतिपूर्ति के लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साधन-सामग्री चाहिए। यह सृजन कार्य किन्हीं व्यक्तियों के माध्यम से ही होगा। संकटों से जुझने के लिए कोई सशक्त योद्धा ही लड़ाई की अग्रिम पंक्ति में खड़े होंगे। दोनों ही उद्देश्य इन्हीं व्यक्तियों के किन्हीं क्रिया-कलापों के माध्यम से ही संपन्न होंगे। आवश्यक नहीं कि यह सारे कार्य उसी के हों, जिसे कि श्रेय मिला हो। मोर्चे पर लड़ते तो सैनिक ही हैं; पर उन्हें जो वाहन, हथियार, रसद, आहार मिला है, वह उस सैनिक के स्वयं के नहीं, वरन् संचालक सूत्र से ही उपलब्ध होते हैं।

अगले दिनों भयंकर विभीषिकाओं को निरस्त होकर रहना है, साथ ही अभावों का जो भारी त्रास छाया हुआ है, उसे भी परास्त करना है। उस कार्य को सक्रिय परिजन कटिबद्ध होकर करेंगे ही; पर वस्तुतः इस प्रयोजन के लिए जितनी प्रचुर शक्ति, सूझ-बूझ और साधन-सामग्री चाहिए, उतनी पूँजी एकत्रित रूप में सीधी हस्तगत नहीं हो सकती, वरन् बैंक जैसे किसी समर्थ माध्यम से उधार लेनी पड़ेगी। सभी जानते हैं कि ठेकेदारों को निर्माण की ठेकेदारी भर मिलती है। उस समूचे कार्य में लाखों-करोड़ों की पूँजी लगती है, उसका प्रबंध सूत्र-संचालक को ही करना पड़ता है।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

भगवान के विशेष अनुग्रह और अनुदान की उपलब्धि

शरीर उन पंचतत्वों का बना है, जिसे जड़ कहा जाता है। चेतना ही उसमें प्राण रूप है। यदि वह निकल जाए, तो पाँच तत्वों का बना घोंसला निर्जीव बनकर रह जाता है। उसके लिए कुछ कर सकना तो दूर, अपनी रक्षा तक नहीं कर सकता। तुरंत सड़ने-गलने लगता है और जीव-जंतुओं का आहार बनकर, अपनी शक्ल-सूरत तक गँवा बैठता है। प्राण रहते ही किसी को जीवित कहा जाता है। जीवन, वायु की तरह व्यापक और अनंत है। फेफड़ों में जितनी जगह होती है, वायु उतनी ही मात्रा में ग्रहण कर ली जाती है। शरीर-कलेवर के संबंध में भी यही बात है। साँस लेते समय उसकी जितनी आवश्यकता पड़ती है, उतनी ही ग्रहण कर ली जाती है। शेष अनंत आकाश में ही भरी रहती है। उसे अधिक मात्रा में ग्रहण-उपलब्ध करने की कला में प्रवीण लोग उसे 'प्राणायाम' से अतिरिक्त मात्रा में ग्रहण कर लेते हैं और आवश्यकतानुसार विशेष समय पर प्रयुक्त करते हैं। ऐसे ही लोग प्राणवान कहलाते हैं और उस संचय से अपना तथा दूसरों का भला करते हैं।

शरीर-बल प्रायः इतना ही होता है, जितना सीमित मात्रा में प्राण शक्ति विद्यमान रहती है; पर जो आश्चर्यजनक-अद्भुत असाधारण कार्य कर पाते हैं, उनकी चेतना ही विशेष रूप से सक्रिय होती और चमत्कार स्तर के काम करती देखी जाती है। शरीर मनुष्यकृत है। वह नर-नारी के गुण सूत्रों के माध्यम से विकसित होता है; किंतु प्राण देवता है। उसकी असीम मात्रा इस विश्व-ब्रह्मांड में भरी पड़ी है। वह अपने वर्ग के साथ असाधारण मात्रा में एकत्रित भी हो सकता है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाता है। छाया पुरुष स्तर में भी उसी का विशेष कर्तृत्व देखा जाता है। मरणोपरांत उसका स्वतंत्र अस्तित्व भूत-प्रेत आदि के रूप में बना रहता है। जीवित स्थिति में भी अतींद्रिय क्षमताओं के रूप में उसके चमत्कारी करतब देखे जा सकते हैं। प्राणयोग के अभ्यास से इसका अतिरिक्त प्रवाह, शरीर से बाहर निकलकर भी सुषुप्ति, तुरीया, समाधि आदि में अपनी सत्ता बनाए रहकर, बिना शारीरिक-साधनों के अपने अस्तित्व तथा सशक्त विशेषताओं का परिचय दे सकता है।

प्राण की सत्ता हस्तांतरण के उपयुक्त भी है। कोई समर्थ व्यक्ति अपनी दिव्य क्षमता का एक भाग किसी दूसरे को देकर उसकी सहायता भी कर सकता है। आदि शंकराचार्य की कथा प्रसिद्ध है, जिसके अनुसार वे कुछ समय के लिए अपने शरीर से निकलकर किसी दूसरी काया में प्रवेश कर गए थे और लंबी अवधि तक उसी में बने रहे थे।

अन्य विशिष्ट शक्तियाँ भी मनुष्य के साथ अपने ताल-मेल बिठाती और उसके शरीर द्वारा अपने अभीष्ट प्रयोजन पूरे करती रही हैं। कुंती-पुत्र मनुष्य शरीरधारी होते हुए भी विशेष देवताओं के अंश थे। उसी स्तर के वे काम भी करते रहे, जैसे कि साधारण मानवी काया में रहते हुए कर सकना संभव नहीं है। रामायण काल में हनुमान, अंगद आदि के पराक्रमों को भी ऐसे ही देवोपम माना जाता है। मनुष्य शरीरधारी सामान्य प्राण वाले प्रायः वैसे कार्य नहीं ही कर सकते। अवतारी सत्ताएँ मनुष्य शरीर में रहकर ही अपने विशेष कृत्य करतीं और "यदा यदा हि धर्मस्य" वाली प्रतिज्ञा की रक्षा करती हैं।

भगवान जिन्हें विशेष कार्यों के लिए चुनते, नियुक्त करते हैं, उनमें इस दिव्य प्राण की मात्रा ही अधिक होती है, जिसके सहारे वे नर-वानरों की परिधि से ऊँचा उठकर सोचने, ऐसा साहस करने और आदर्श उपस्थित करने में समर्थ होते हैं। भू-बंधनों की रज्जुओं से जकड़े हुए सामान्य मनुष्य न तो वैसा सोच ही सकते हैं और न दिव्य आदर्शों को अपना पाते हैं। दैवी-प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए अतिरिक्त आत्मबल [illegible] नहीं पाते। [illegible]

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

भयभीत होकर किसी अनर्थ की आशंका करने लगते हैं। कायरता न जाने कहाँ से आकर दौड़ पड़ती है और कभी की हुई प्रतिज्ञाएँ—लिए हुए संकल्पों की एक प्रकार भूल ही जाते है।

दैवी अनुग्रह के संबंध में भी लोगों की विचित्र कल्पनाएँ हैं। वे उन्हीं छोटी संभावनाओं को दैवी अनुकंपा मानते रहते हैं, जो सामान्य पुरुषार्थ से अथवा अनायास ही संयोगवश लोगों को उपलब्ध होती रहती है। मनोकामनाओं तक ही उनका नाक रगड़ना, गिड़गिड़ाना सीमित रहता है, जिसे वे दैवी अनुकंपा मानते हैं। आत्मबल-आत्मविश्वास न होने से जो कुछ प्राप्त होता है, उसे पुरुषार्थ का प्रतिफल मानकर, उनका मन संतुष्ट ही नहीं होता। उनके लिए हर सफलता दैवी अनुग्रह और हर असफलता दैवी प्रकोप मात्र प्रतीत होती है। ऐसे दुर्बल चेताओं की बात छोड़ दें, तो यथार्थता समझ में आ जाती है; पर अंततः एक ही तथ्य सामने आता है कि मनुष्य जब आदर्शवादी अनुकरणीय-अभिनंदनीय कर्मों को करने के लिए उमंगों-तरंगों से भर जाता है, तो वह असाधारण कदम उठाने लगता है। रावण की सभा में अंगद का पैर उखाड़ना तक असंभव प्रतीत होने लगा था। औसत आदमी को तो हर काम असंभव लगता है। ऐसे छोटे त्याग करना भी उसे पहाड़ उठाने जैसा भारी पड़ता है, जो वस्तुतः हल्के-फुल्के ही होते हैं और हिम्मत के धनी आदर्शवादी, जिन्हें आए दिन करते-रहते हैं।

दैवी अनुग्रह का एक ही चिह्न है—आदर्शवादिता की दिशा में साहसपूर्वक बड़े कदम उठाना और उस प्रयास में आने वाली कठिनाइयों को हँसते-हँसते दर-गुजर कर देना। भगवान का अनुग्रह एक ही है—आदर्शों के परिपालन में बढ़ी-चढ़ी साहसिकता का प्रदर्शन करते रहना। कायरों और हेयजनों के लिए यही पर्वत उठाने जैसा अड़ंगा प्रतीत होता है; किंतु जिनमें मनोबल की कमी नहीं, उनके लिए तो यह सब खेल-खिलवाड़ जैसा लगता है। संसार का इतिहास साक्षी है कि जिस किसी पर भगवान की प्राण चेतना—अनुकंपा बरसी है, उनको एक ही वरदान मिला है, ऐसे सत्कर्म करने का साहस मिला है, ऐसा उत्साह मानस में विचरता रहा है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इतना शौर्य-साहस उभरता है कि उसे चरितार्थ किए बिना व्यक्ति शांति से बैठ ही नहीं सकता।

इक्कीसवीं सदी में ऐसी ही प्रतिभाएँ सर्वत्र उभरेंगी, जिनके पिछले किए क्रिया-कलाप देखने से निराशा होती थी, उनमें से भी कितने ही ऐसे उभरेंगे, जो अपने को धन्य बनाएँगे। अपने इर्द-गिर्द के लोगों को भी पार करके निहाल कर देंगे। पैसा, औलाद, स्वास्थ्य, बड़प्पन को बुरे लोग भी अपने बलबूते अर्जित कर लेते हैं, पर आदर्शों की दिशा में साहसपूर्वक चल पड़ना मात्र उन्हीं के लिए संभव होता है, जिन पर भगवान की विशेष अनुकंपा बरसती है; जिसे परमपिता कृपापूर्वक अपने उच्चस्तरीय प्राण का वह भाग प्रदान करते हैं, जिसके सहारे नर-वानर को नर से नारायण बनने का अवसर प्राप्त होता है।

❐ ❐

पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता

परमात्मा ने, प्रकृति ने मनुष्य मात्र को बहुत कुछ ऐसा असाधारण दिया है, जिसके आधार पर वह सुख-सौभाग्य, प्रगति स्वयं प्राप्त करने के साथ-साथ औरों के लिए भी सहायक सिद्ध हो सकता है, परंतु मनुष्य की दुर्बुद्धि कहें या माया का भटकाव, जिसके प्रभाव से सुख-सौभाग्य के स्थान पर वह अपने तथा औरों के लिए समस्याएँ एवं विडंबनाएँ ही रचता रह जाता है। लालसा, वासना और अहंता के चक्र में मनुष्य स्वयं को दयनीय स्थिति तक पहुँचा देता है।

इस स्वनिर्मित दुर्गति से पार निकलना कैसे हो ? गिरना तो किसी के लिए भी सरल हो सकता है; पर उबरने और ऊँचा उठने के लिए मात्र अपने परुषार्थ से भी काम नहीं चलता: उसके लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

को अकस्मात अप्रत्याशित रूप से मुफ्त में नहीं मिलती। उधार देकर समर्थ सत्ता भी उसका कुछ बदला चाहती है। मुफ्त में तो यहाँ किसी को कुछ भी नहीं मिलता।

पात्रता का नियम मनुष्य पर तीन प्रकार से लागू होते हैं—एक उत्साह और स्फूर्ति भरी श्रमशीलता; दूसरी तन्मयता, तत्परता भरी अभिरुचि; तीसरी उत्कृष्टता के लिए गहरी लगन और ललक। यह तीनों जहाँ-कहीं भी सम्मिलित रूप से पाई जाएँगी, समझना चाहिए कि सफलता तक दौड़कर जा पहुँचने का अवसर मिला। पात्र हो तो पानी से न सही, हवा से वह जरूर भर जाएगा। खाली तो कभी रहेगा ही नहीं। ईश्वर की अनुकंपा भी ऐसे ही लोगों पर बरसती है। उच्च पदों पर नियुक्ति उन्हीं की होती है, जो निर्धारित प्रतिस्पर्धाओं में बाजी मारते हैं।

यों ईश्वर के लिए सभी समान और सभी प्रिय हैं; पर उनके साथ बेइन्साफी भी तो नहीं की जा सकती, जिन्होंने अथक परिश्रम करके अपनी योग्यता का परिचय दिया है। कोई बड़ा कारखाना खड़ा किया जाना होता है और उसके निर्माण में जल्दी करनी होती है, तो एक ही उपाय रह जाता है कि सुयोग्य एवं अनुभवी अधिकारियों की बड़ी संख्या में नियुक्ति की जाए। अधिक कारीगर खोजे और जुटाये जाएँ। यही अगले दिनों होने जा रहा है।

प्रतिभावान व्यक्ति जहाँ-तहाँ मारे-मारे नहीं फिरते। गुणवानों, प्रतिभावानों को कभी खाली नहीं पाया जाता। इस पर भी यह आपत्तिकाल है। गरज कारीगरों को उतनी नहीं पड़ी है, जितनी कि निर्माणकर्त्ताओं को अपने अच्छे और भव्य काम समय रहते करा लेने की है।

भक्त भगवान से सदा अनुग्रह माँगते रहते हैं; पर अबकी बार इन दिनों ऐसा समय है, जिसमें निर्माणकर्ता को ही बड़ी बेचैनी से सत्पात्रों की खोज-बीन करनी पड़ रही है। काम तो नियंता का ही रुका पड़ा है। उसे ही उतावली है। जैसी सड़ी-गली परिस्थितियाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ढूँढ़े जा रहे हैं। विशेष अनुदान और उपहार भी उन्हीं को अविलंब मिलने वाले हैं। औसत स्तर के व्यक्तियों से लेकर प्रतिभावानों तक को, इस अभिनव सृजन में भाव-भरा योगदान प्रस्तुत करने के लिए समुचित अनुदान उदारतापूर्वक दिए जाने हैं।

साधारण और औसत दर्जे का व्यक्ति भी यदि सामान्य चाल और धीमी गति से प्रगति पथ पर आगे बढ़ता चले, तो इसका परिणाम भी ऐसा हो सकता है, जिससे उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न साकार होते देखा-समझा जा सके। प्रतिभाशालियों का समुदाय इसके अतिरिक्त है, जिनमें शारीरिक स्फूर्ति, मानसिक साहसिकता और अंतःकरण में उमंग भरी रहती है, वे परिस्थितियों की दृष्टि से सामान्य होने पर भी इतना कुछ कर सकते हैं, जिसे अद्भुत कहा जा सके। जटायु जैसे अपनी आदर्शवादी उमंगों के आधार पर इतना कुछ कर सके, जितना कि हीन मनोबल वाले तरुण और बलिष्ठ भी नहीं कर सके। ऐसी कृतियाँ सदा स्मरण की जाती रहेंगी। अष्टावक्र जैसे टूटे-फूटे शरीर वालों ने ऐसे इतिहास की संरचना की, जिसका स्मरण करने मात्र से मन उल्लास से भर जाता है। लक्ष्मीबाई जैसी लड़कियाँ शत्रुओं के दाँत खट्टे करके, अपने पौरुष का परिचय दे सकीं। भामाशाह की थोड़ी-सी पूँजी ने राणा प्रताप की हारती बाजी को जिता दिया। संसार ऐसी प्रतिभाओं की कथा-गाथाओं से भरा पड़ा है।

साहित्य, कला, लगन, संगठन, सुनियोजन जैसे कितने ही गुण मनुष्य में ऐसे हैं, जिनका आंशिक उपयोग हो सके, तो वैयक्तिक और सामूहिक क्षेत्रों में आश्चर्यजनक चमत्कार सामने आ सकते हैं। ऐसे लोगों में वे साधन-संपन्न भी आते हैं, जिन्हें साधारण लोगों की तुलना में कहीं अधिक उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। पैसे वाले ऐसे व्यापक व्यवसाय खड़े कर देते हैं, जिसके उत्पादन से अनेकों बहुमुखी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। वकील, इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक आदि बुद्धिजीवी अपने कला-कौशल के आधार पर इतनी बड़ी सफलताएँ अर्जित [illegible] लोगों से तो कल्पना करते भी नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

पैसा कमा लेते हैं, कि साधारण लोगों की दृष्टि में वह कोई वरदान जैसा प्रतीत होता है। कितने ही ऐसे विश्वासपात्र प्रतिभावान होते हैं कि वे जिस काम को भी हाथ में लेते हैं, उसे सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचा देते हैं।

देखा गया है कि ऐसे विभूतिवान भी मात्र लिप्सा, लालसा, तृष्णा, वासना, अहंता और संकीर्ण स्वार्थपरता जैसे हेय प्रयोजनों में ही अपनी उन उपलब्धियों को खपा देते हैं, जिनका उपयोग यदि लोक कल्याण के लिए हो सका होता, तो उतने पौरुष से निर्माण की दिशा में इतना कुछ बन पड़ा होता, जिनकी कीर्ति-गाथा चिरकाल तक गाई जाती और उनका अनुकरण करके, कितने ही लोग अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर सके होते।

भगवान ने जिनको ऐसी सद्बुद्धि, सत्प्रेरणा और सत्साहसिकता प्रदान की है, उन्होंने अपने साधनों को विलासिता, अहंता और मोहजन्य वासना में न लगाकर, ऐसे महान प्रयोजनों में लगाया है, कि उनसे प्रेरणा पाकर, अनेकों लोग उसी मार्ग पर चल पड़े। तब उस समुदाय का सम्मिलित क्रिया-कलाप इतना बड़ा होता है, जिनकी कल्पना मात्र से लोगों का हृदय हुलसने लगता है और देखा-देखी वे भी ऐसा कुछ कर बैठने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं, जिससे असंख्यों का हित-साधन हो। जब सामान्य साधनों और सामान्य-परिस्थितियों के लोगों ने इतने भर से बड़े कार्य कर दिखाए, तो जिनके पास साधन हैं, शक्ति है, संगठन है, मनोबल है, सूझ-बूझ है, वे कुछ अतिरिक्त उच्चस्तर के काम न कर सकें, ऐसी कोई बात नहीं।

मनुष्य की कृपणता, कायरता, संकीर्णता ही ऐसा अभिशाप है, जो उसे समर्थ रहते हुए भी कुछ करने नहीं देती, कठिनाइयों के जैसे-तैसे बहाने गढ़ लेती है। इसी को धिक्कारते हुए गीताकार ने कहा था कि—"**क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यत्वंतिष्ठ परंतप**"। हृदय की इस क्षुद्रता, कृपणता से कोई अपना पीछा छुड़ा सके, तो आदर्शवादी उदारता उसके ऐसे प्रष्ट आधार बना देती है, जिसके बलबूते वह महामानवों की पंक्ति में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह समय चूकने का है नहीं

आमतौर से भक्तजन भगवान को पुकारते और उनकी सहायता के लिए विनयपूर्वक गिड़गिड़ाते रहते हैं। पर कभी-कभी ऐसे समय भी आते हैं, जब भगवान उन भक्त जनों से आवश्यक याचना करते हैं और बदले में उन्हें इतना महत्त्व देना पड़ता है, जो उनकी अपनी महत्ता से भी बढ़-चढ़कर होता है।

हनुमान की वरिष्ठता के संबंध में जानकारी प्राप्त करने पर राम-लक्ष्मण उन्हें खोजने ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचे थे और येन-केन प्रकारेण उन्हें सीता की खोज में सहायता करने के लिए सहमत किया था। गंगाघाट पार करने के लिए केवट की सहायता आवश्यक हो गई थी। इसलिए केवट को उन्होंने आग्रहपूर्वक सहायता करने के लिए किसी प्रकार मनाया। आड़े समय में काम आने वाले जटायु को छाती से लगाकर कृतज्ञता व्यक्त की; उसकी अनुभूति हर सुनने वाले को भाव-विभोर कर देती है। समुद्र का पुल बाँधने में जिन निहत्थे रीछ-वानरों ने सहायता की, उनकी उदार चेतना को हजारों वर्ष बीत जाने पर भी कथाकारों ने भुलाया नहीं है।

महाभारत अभीष्ठ था। उसकी बागडोर सँभालने के लिए अर्जुन जैसे मनस्वी की आवश्यकता थी। अर्जुन से पूछा गया तो वह अचकचाने लगा। कभी भीख माँगकर खा लेने, कभी कुटुंबियों पर हथियार न उठाने का सिद्धांतवाद तर्क रूप में प्रस्तुत करने लगा। भगवान ने उसके मन की कमजोरी पढ़ी और भर्त्सनापूर्वक कटु शब्दों में दबाव डाला कि उसे उस कठोर कार्य में उद्यत होना ही चाहिए। यों भगवान सर्व शक्तिमान होने से महाभारत को अकेले भी जीत सकते थे, पर अर्जुन को श्रेय देना था, जो सच्ची मित्रता का तकाजा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

भागीदार बनने के लिए सहमत करना ही पड़ा। अर्जुन घाटे में नहीं, नफे में ही रहा।

सुदामा बगल में दबी चावल की पोटली देना नहीं चाहते थे, सकुचा रहे थे, पर उन्होंने उस दुराव को बलपूर्वक छीना और चावल देने की उदारता परखने के बाद ही द्वारिकापुरी को सुदामापुरी में रूपांतरित किया। भक्त और भगवान के मध्यवर्ती इतिहास की परंपरा यही रही है। पात्रता जाँचने के उपरांत ही किसी को कुछ महत्त्वपूर्ण मिला है। जो आँखें मटकाते आँसू बहाते, रामधुन की ताली बजाकर बड़े-बड़े उपहार पाना चाहते हैं, उनकी अनुदारता खाली हाथ ही लौटती है। भगवान को ठगा नहीं जा सकता है। वे गोपियों तक से छाछ प्राप्त किए बिना अपने अनुग्रह का परिचय नहीं देते थे। जो गोवर्धन उठाने में सहायता करने की हिम्मत जुटा सके, वही कृष्ण के सच्चे सखाओं में गिने जा सके।

यह समय युग परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य का है। इसे आदर्शवादी कठोर सैनिकों के लिए परीक्षा की घड़ी कहा जाए, तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं समझी जानी चाहिए। पुराना कचरा हटता है और उसके स्थान पर नवीनता के उत्साह भरे सरंजाम जुटते हैं। यह महान परिवर्तन की महाक्रांति की वेला है। इसमें कायर, लोभी, डरपोक और भाँड़ आदि जहाँ-तहाँ छिपे हों, तो उनकी ओर घृणा, तिरस्कार की दृष्टि डालते हुए, उन्हें अनदेखा भी किया जा सकता है। यहाँ तो प्रसंग हथियारों से सुसज्जित सेना का चल रहा है। वे ही यदि समय की महत्ता, आवश्यकता को, न समझते हुए, जहाँ-तहाँ मटरगस्ती करते फिरें और समय पर हथियार न पाने के कारण समूची सेना को परास्त होना पड़े, तो ऐसे व्यक्तियों पर तो हर किसी का रोष ही बरसेगा, जिन्होंने आपात स्थिति में भी प्रमाद बरता और अपना तथा अपने देश के गौरव का मटियामेट करके रख दिया।

जीवंतों, जागृतों और प्राणवान में से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए कि यह ऐसा विशेष समय है जैसा कि हजारों-लाखों वर्षों बाद

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं पा सकता। हनुमान और अर्जुन की भूमिका हेतु फिर से लालायित होने वाला कोई व्यक्ति चाहे कितने ही प्रयत्न करे, अब दुबारा वैसा अवसर हस्तगत नहीं कर सकता। समय की प्रतीक्षा तो की जा सकती है, पर समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। भगीरथ, दधीचि और हरिश्चंद्र जैसा सौभाग्य अब उनसे भी अधिक त्याग करने पर भी पाया नहीं जा सकता।

समय बदल रहा है। प्रभात काल का ब्रह्ममुहूर्त अभी है। अरुणोदय के दर्शन अभी हो सकते हैं। कुछ घंटे ऐसे हैं उन्हें यदि प्रमाद में गँवा दिए जाएँ, तो अब वह गया समय लौटकर फिर किस प्रकार आ सकेगा ? युग-परिवर्तन की वेला ऐतिहासिक, असाधारण अवधि है। इसमें जिनका जितना पुरुषार्थ होगा, वह उतना ही उच्च कोटि का शौर्य पदक पा सकेगा। समय निकल जाने पर, साँप निकल जाने पर लकीर को लाठियों से पीटना भर ही शेष रह जाता है।

इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नए सिर से लिखा और गढ़ा जा रहा है। ऐसा विलक्षण समय कभी हजारों-लाखों वर्षों बाद आता है। इन्हें चूक जाने वाले सदा पछताते ही रहते हैं और जो उसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं। गोवर्धन एक बार ही उठाया गया था। समुद्र पर सेतु भी एक ही बार बना था। कोई यह सोचता रहे कि ऐसे समय तो बार-बार आते ही रहेंगे और हमारा जब भी मन करेगा, तभी उसका लाभ उठा लेंगे, तो ऐसा समझने वाले भूल ही कर रहे होंगे। इस भूल का परिमार्जन फिर कभी कदाचित ही हो सके।

लोग अपने पुरुषार्थ से तो अपने अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करते ही रहते हैं; पर भगवान के उपायों का श्रेय मनुष्य को अनायास ही मिल जाए, ऐसा कदाचित ही कभी होता है। अर्जुन का रथ एक बार ही कृष्ण ने चलाया था। वे उसके केवल, मात्र सारथी नहीं थे कि जब हुकुम चलाया, तभी उनसे वह काम करा लिया। भगवान राम और लक्ष्मण को कंधों पर उठाये-फिरने का श्रेय हनुमान को एक ही बार मिला था। वे जब चाहते तभी हनूमान हठी बनकर, उन्हें कंधों पर बिठाते और सैर कराते;

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

ब्रह्मा ने सृष्टि एक बार ही रची थी। उसके बाद तो वह ढर्रा ज्यों-त्यों करके अपने ढंग से चला ही आ रहा है। नए युग का सृजन इन्हीं दिनों हो रहा है। समुद्र-मंथन एक बार ही हुआ और उसमें से १४ रत्न एक बार ही निकले थे। वैसी घटनाएँ जब मन आए तभी घटित कर दी जाएँगी, यह आशा नहीं करनी चाहिए।

अवांछनीयता के पलायन का, औचित्य की संस्थापना का ब्रह्म मुहूर्त, एक बार ही आया है। फिर कभी हम लोग इसी मनुष्य जन्म में ऐसा देख सकेंगे, इसकी आशा करना एक प्रकार से अवांछनीय ही होगा। अच्छा यही हो कि ऐसी पुण्य वेला का लाभ उठाने में आज के विचारशील तो चूक करें ही नहीं।

❐ ❐

उठाने वाले के साथ जुड़ें

इन दिनों नव निर्माण प्रयोजन भगवान की प्रेरणा और उनके मार्गदर्शन में चल रहा है। उसे एक तीव्र सरिता-प्रवाह मानकर चलना चाहिए, जिसकी धारा का आश्रय पकड़ लेने के बाद कोई कहीं से कहीं पहुँच सकता है। तूफान के साथ उड़ने वाले पत्ते भी सहज ही आसमान चूमने लगते हैं। ऊँचे पेड़ का आसरा लेकर दुबली बेल भी उतनी ही ऊँची चढ़ जाती है, जितना कि वह पेड़ होता है। 'नव निर्माण' महाकाल की योजना एवं प्रेरणा है। उसका विस्तार तो उतना होना ही है, जितना कि उसके सूत्र-संचालक ने निर्धारित कर रखा है। इस विश्वास को जमा लेने पर अन्य सारी समस्याएँ सरल हो जाती हैं। नव निर्माण का कार्य ऐसा नहीं है, जिसके लिए कि घर-गृहस्थी, काम-धंधा छोड़कर पूरा समय साधु-बाबाजियों की तरह लगाना पड़े। यह कार्य ऐसा है, जिसके लिए दो घंटे नित्य लगाते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आ उपस्थित हो सकता है, जिसे आदरणीय, अनुकरणीय और अभिनंदनीय कहा जा सके।

इस युग धर्म के निर्वाह के लिए अपने परिवार को प्रेरित किया जा रहा है। आरंभ में विचार था अपने परिजनों के बलबूते ही सन् २००० में होने वाली पूर्णाहुति में एक करोड़ भागीदार बनाए जा सकेंगे, किंतु परिजनों का उत्साह तथा समय की महत्ता और आवश्यकता देखते हुए गतिचक्र को दूना बढ़ा दिया गया है। अब पाँच-पाँच वर्ष में दो पूर्णाहुतियाँ होंगी; एक सन १९९५ में, दूसरी सन् २००० में। इन दोनों में एक-एक लाख वेदियों के दीप यज्ञ होंगे। इसी प्रकार एक करोड़ याजक इसमें सम्मिलित होंगे। लोगों के अंतःकरण में जिस क्रम से उत्साह उभरा है, उसे देखते हुए प्रतीत होता है कि जितना संकल्प किया है, उससे कई गुनी गति बढ़ेगी और लक्ष्य से कहीं अधिक आगे पहुँचेंगे।

यह मात्र कल्पना नहीं है। दिव्य संरक्षण में सक्रिय होने वाला उत्साह बूँद-बूँद से सागर की उपमा चरितार्थ करता है। अपने वर्तमान पाँच लाख परिजनों में से, एक लाख जीवंत-वरिष्ठों को अग्रदूतों की भूमिका के लिए छाँटा जा रहा है। उन्हें एक हल्का-सा काम सौंपा गया है। वे प्रतिदिन पाँच-दस परिचितों को नव प्रकाशित इक्कीसवीं सदी संबंधी पुस्तकें एक-एक करके पढ़ाएँ-सुनाएँ। घंटे-दो घंटे समयदान देने वाले के लिए यह कार्य बहुत आसान हैं।

यदि औसतन १० दिनों में न्यूनतम ५ व्यक्तियों को भी यह सैट पढ़ाया जाए, तो एक माह में १५ तथा एक वर्ष में १८० व्यक्तियों तक एक ही परिजन नव चेतना का संदेश पहुँचा सकता है। इस प्रकार पाँच वर्ष में यह संख्या ६०० हो जाएगी। इस क्रम से एक लाख परिजनों द्वारा, पाँच वर्ष में ६ करोड़ व्यक्तियों को युग चेतना से अनुप्राणित किया जा सकेगा। यह संख्या आश्चर्यजनक लगती है, पर यह न्यूनतम आँकड़े हैं। नैष्ठिक पुरुषार्थी १० दिन में १० व्यक्तियों को भी पढ़ा-सुना सकता है। तब यह संख्या दो गुनी हो जाएगी अर्थात पाँच वर्ष में १८ करोड़। अगले पाँच वर्ष में नैष्ठिकों की संख्या बढ़ेगी ही अस्तु उस पाँच वर्षीय पुरुषार्थ से और भी अधिक लोगों को अनप्राणित किया जा सकेगा। सफलता का प्रतिशत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

इस संबद्ध परिकर को दैनिक जीवन में कई काम सुपुर्द किए गए हैं। इनमें से एक है १०८ बार गायत्री मंत्र का जाप। उतने ही समय तक प्रातःकालीन सूर्योदय का ध्यान, जिसमें अनुभव करना कि वह तेजस् अपने कण-कण में, रोम-रोम में समाविष्ट होकर समूची काया को ओजस्वी, तेजस्वी और वर्चस्वी बना रहा है। यह अनुभव साधक के उत्साह एवं साहस को कई गुना बढ़ा देता है।

इसी साधना का एक पक्ष यह है कि उद्गम केंद्र शांतिकुंज की एक मानसिक परिक्रमा लगा ली जाए और विगत ६५ वर्ष से अखंड लौ में जल रहे दीपक के समीप बैठकर, उससे निःस्सृत होने वाली प्राण चेतना का अपने में अवधारण करते रहा जाए।

विचार क्रांति-ज्ञान यज्ञ है, इसका हर दिन अवगाहन किया जाए। इक्कीसवीं सदी संबंधी जो पुस्तकें हैं, जो इन दिनों छपती जा रही हैं, उस क्रम में हर महीने छह पुस्तकें छापने की योजना है। बीस पैसा नित्य का अंशदान निकालते रहने पर एक महीने में छहः रुपए की राशि जमा हो जाती है। इसी पैसे से हर महीने का नया प्रकाशन एक लाख पाठकों को मिलता रहेगा। इन्हें एक से लेकर दस तक को पढ़ा देना या सुना देना ऐसा कठिन काम नहीं है, जिसे कि दो घंटे समयदान करने वाला पूरा न कर सके। यह पढ़ाने या सुनाने का क्रम नियमित रूप से चलता रहे, तो एक वर्ष में ही वह संख्या पूरी हो सकती है, जो पाँच वर्ष के लिए निर्धारित की गयी है। 'अधिकस्य अधिकं फलम्' की सूक्ति के अनुसार, युग चेतना का स्वरूप जितने अधिक लोग समझ सकें, हृदयंगम कर सकें और व्यवहारिक जीवन में उतार सकें, उतना ही उत्तम है।

सन् १९६० की बसंत पंचमी से यह ज्ञान यज्ञ आरंभ किया जा रहा है। सन् १९६५ में इस महायज्ञ की अर्ध पूर्णाहुति होगी। उस निमित्त एक लाख वेदियों के यज्ञ वसंत पंचमी से संपन्न हो जाएँगे। इस प्रकार एक लाख दीप यज्ञ और एक करोड़ के ज्ञान यज्ञ का, जप यज्ञ का संकल्प तब तक भली प्रकार पूरा हो जाएगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

पूरे हो सकेंगे। वर्तमान परिजनों की बढ़ी हुई संख्या और उमंग को देखते हुए प्रतिफल उससे ज्यादा ही होने की संभावना है।

उपरोक्त बात क्रियाकृत्य से संबंधित रही। निर्धारणों को जीवन में उतारने का प्रतिफल तो और भी अधिक प्रभावकारी होगा। शारीरिक स्फूर्ति, मानसिक उल्लास और भावनात्मक संवेदना की योग साधना हर किसी को नित्य-नियम के रूप में करनी होगी। मितव्ययता का अभ्यास और बचे हुए समय तथा पैसे को जीवनचर्या में युग चेतना का समावेश करने के क्रम में लगाए रहने वाला पुण्यात्मा और अधिक धर्मपरायण बनता चला जाएगा। जलता हुआ दीपक दूसरे बूझे दीपकों को जलाता है। एक लाख से आरंभ हुआ युग चेतना अभियान, पाँच-पाँच वर्षों में करोड़ों को अपने प्रभाव से प्रभावित कर डाले तो उसे कुछ भी असाधारण नहीं मानना चाहिए। यह क्रम आगे भी बढ़ता रहे, तो वह दिन दूर नहीं, जब समूची मनुष्य जाति इस प्रभाव क्षेत्र में होगी, प्रगतिशीलता का माहौल बनता दीख पड़ेगा, मानवी गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता अपनाते हुए जन-जन दिखाई देंगे।

पिछली एक शताब्दी में कुविचारों और कुकर्मों की बाढ़ जैसी आ गयी। लोग भ्रष्ट-चिंतन और दुष्ट कर्मों के अभ्यासी बनने लगे। पतन का क्रम कहाँ से कहाँ जा पहुँचा ? लोग गिरने और गिराने में प्रतिस्पर्धा मानने लगे। इसी प्रवाह को यदि उलट दिया जाए तो अगली एक शताब्दी में सदाशयता की उत्साहवर्धक अभिवृद्धि भी हो सकती है। गिरने और गिराने वाले यदि अपनी गतिविधियों को उलटकर उठने और उठाने में लगा दें तो उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को मूर्तिमान बनने में कुछ भी संदेह न रह जाएगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिशन की पत्रिकाएँ

(१) अखण्ड ज्योति (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क-तथ्य-प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक शुल्क-९६.००, आजीवन शुल्क-१८००.०० रुपया।

अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि-मासिक)

वार्षिक शुल्क-६०.०० रुपया।

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २४०३९४०

(२) युग निर्माण योजना (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क-४८.००, आजीवन शुल्क-९००.०० रुपया।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक शुल्क-७५.००, आजीवन शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

(३) प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-२४.०० रुपया।

पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : शांतिकञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : ०१३३४-२६०६०२

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.